

# भारतीय सिनेमा इतिहास की सर्वश्रेष्ठ फिल्में

# गाइड (1966)

हिंदी फिल्मी दुनिया के इतिहास में निर्माता, निर्देशक, अभिनेता देव आनंद व उनके द्वारा निर्मित 'नवकेतन बैनर' के अमूल्य योगदान को भुलाया जाना सम्भव नहीं है। क्योंकि देव आनंद ने अपनी प्रथम फिल्म 'हम एक हैं' (1948) से लेकर हाल में प्रदर्शित 'सेंसर' तक की फिल्मों में नायक की भूमिका करते आये हैं, जो अपने आप में एक रिकार्ड है और आज 78 साल की उम्र में भी नौजवानों की भांति फिल्म निर्माण के क्षेत्र में तन, मन धन से पूर्णतः सक्रिय हैं, जो अभिनय के प्रति उनके समर्पण की भावना को दर्शाती है। 1966 में प्रदर्शित फिल्म 'गाइड' भी 'नवकेतन बैनर' तले बनी फिल्मी दुनिया की सफलतम फिल्मों में से एक है। फिल्म 'गाइड' का निर्देशन देव आनंद के भाई विजय आनंद ने किया था। फिल्म में संगीत सचिन देव बर्मन ने दिया और गीत लिखे थे अमर गीतकार शैलेन्द्र ने।

प्रत्येक मील का पत्थर फिल्मों की भांति फिल्म 'गाइड' का निर्माण भी विषम परिस्थितियों में शुरू हुआ। फिल्म 'गाइड' को देव आनंद अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बनाने के पक्षधर थे, जिस कारण चेतन आनंद फिल्म से अलग हो गये, क्योंकि चेतन आनंद फिल्म का निर्माण अपने तरीके से करना चाहते थे। फिल्म 'गाइड' का विषय उपन्यासकार आर.के. नारायण के उपन्यास 'गाइड' को चुना गया, क्योंकि इसमें शादी के बाद के सम्बंधों पर प्रकाश डाला गया था। अंग्रेजी वर्जन की कहानी के लिये देव आनंद ने उपन्यासकार 'पर्ल एस. बक' की सहायता ली, तो उन्होंने सुझाव दिया कि 'ऐसी कहानियां अमेरिकी दर्शकों के लिये आम बात है इसलिये आप कहानी में कुछ परिवर्तन कीजिये।' लेकिन देव आनंद इसके लिये तैयार न हुये। अंग्रेजी वर्जन की फिल्म के लिये अमेरिकी निर्देशक टेड डेनियलेवस्की को चुना गया।

पर्ल एस. बक द्वारा लिखी कहानी से हिंदी निर्देशक विजय आनंद कतई खुश न थे, क्योंकि उनकी नजर में पर्ल ने फिल्म की हीरोइन का रोल वैम्प की भांति कर दिया था, जो शायद ही हिंदी दर्शक पचा पाते, परन्तु वे अपनी भावनाओं को व्यक्त न कर सके। हिंदी व अंग्रेजी वर्जन की फिल्मों की शूटिंग साथ-साथ शुरू हुई। अमेरिकी निर्देशक टेड अपना शॉट लेने के बाद विजय आनंद की शूटिंग में दखल देने लगते थे, जिस कारण विजय आनंद असमंजस में पड़ गये और अपने को अपमानित महसूस करने लगे, इसलिये कुछ समय पश्चात विजय आनंद फिल्म से अलग हो गये।

विजय आनंद के फिल्म छोड़ने के पश्चात निर्देशन की जिम्मेदारी निर्देशक राज खोसला को सौंपी गई, लेकिन राज खोसला के निर्देशन में काम करने से वहीदा रहमान ने साफ इनकार कर दिया, क्योंकि अतीत में राज खोसला ने वहीदा रहमान को कुछ उल्टा-सीधा कह दिया था और वहीदा रहमान ने भविष्य में राज खोसला के साथ काम न करने की कसम खाई थी। राज खोसला ने माफी भी मांगी, मगर बात न बनी, अतः राज खोसला को भी फिल्म छोड़ने पर मजबूर होना पड़ा।

देव आनंद ने अपने बड़े भाई चेतन आनंद से बात की, परन्तु चेतन आनंद अपनी फिल्म 'हकीकत' की शूटिंग के सिलसिले में कश्मीर जाने की पूरी तैयारी कर चुके थे, इसलिये चेतन आनंद ने भी मना कर दिया। घूम-फिर कर देव आनंद विजय आनंद के पास पहुंचे। तब विजय आनंद ने देव आनंद से कहा, 'मैं फिल्म का निर्देशन करने के लिये तैयार हूं, लेकिन आप पहले अमेरिकी निर्देशक टेड को अपना काम करके जाने दीजिये, तब मैं अपने मन मुताबिक शूटिंग करूंगा और आपको एक बेहतर फिल्म बना कर दूंगा।' देव आनंद ने विजय आनंद की शर्तें मान लीं। तब विजय आनंद ने दोबारा स्क्रिप्ट पर काम किया और लगभग अठारह दिनों की मेहनत के उपरांत दोबारा स्क्रिप्ट लिखी गई और इस प्रकार हिंदी में बनी 'गाइड' विजय आनंद के दिमाग की देन थी।

फिल्म गाइड की कहानी कुछ इस प्रकार बनी- राजू गाइड, आने वाले पर्यटकों को ऐतिहासिक स्थलों की सम्पूर्ण जानकारी देता है। वहां एक विवाहित दम्पति आता है जिसमें से से पति महत्वपूर्ण जगहों की खुदाई करके नाम कमाने में मशरूफ रहता है। जबकि उसकी पत्नी रोजी ये सब पसंद नहीं करती। उसकी तन्हाई





व उदासीपन को समझते हुये पति रोजी को राजू गाइड के साथ घूमने की इजाजत देता है और खुद इस प्रकार खुदाई में रम जाता है कि मानो उसकी दुनिया सिर्फ वहीं (खुदाई) ही है। इधर राजू रोजी को विभिन्न स्थानों पर घुमाता है। रोजी एक अच्छी नर्तकी है और खुले विचारों के तहत आजादी के साथ जीना पसंद करती है, जो बंधन टूटने के बाद शहर आकर लोकप्रिय अभिनेत्री नर्तकी बन जाती है। राजू व रोजी एक दूसरे से प्यार करने लगते हैं व राजू ही रोजी का सारा हिसाब यानी सैक्रेटरी का काम करता है, लेकिन जल्द ही रोजी का राजू से मोह भंग हो जाता है और राजू रोजी की बेवफाई सहन नहीं कर पाता व सब कुछ छोड़कर एक गांव में चला जाता है। जहां पर लोगों को ज्ञान की बातें बताने लगता है और वहां के लोग राजू को आध्यात्मिक गुरु मानने लगते हैं। गांव में सूखा पड़ता है तो राजू बारिश कराने के उद्देश्य से उपवास रखता है और अंत में भूखा-प्यासा मर जाता है, लेकिन बारिश होती है।

फिल्म में राजू गाइड की भूमिका देव आनंद ने निभाई तो रोजी का रोल वहीदा रहमान ने किया और उसके पति की भूमिका किशोर साहू ने की थी। शेष कलाकारों में जागीरदार, लीला चिटणीस, अनवर, रशीद खान, आदि थे। फिल्म में देव आनंद ने तीन अलग-अलग तरह की भूमिका निभाई। राजू गाइड के रूप में मस्तमौला नौजवान, फिर शहर का शराब में डूबा प्रेमी और आखिर में आध्यात्मिक गुरु के रूप में, और देव आनंद के अभिनय को बखूबी कैनवास के बड़े पर्दे पर सजीव करने में भरपूर सहायता प्रदान की सिनेमाटोग्राफर फली मिस्त्री ने, जिन्होंने विभिन्न लेंसों की मदद से देव आनंद की भूमिका को विविधता प्रदान की और फली मिस्त्री के कहने पर ही देव आनंद ने फिल्म में रेशम का शाल पहना, वरना देव आनंद इसके लिये कतई राजी न थे।

और इस प्रकार फिल्म पूरी हो गई, लेकिन फिल्म को कोई खरीदार नहीं मिल पा रहा था और फिर अंग्रेजी की फिल्म 'गाइड' आकर पहले ही फ्लॉप हो चुकी थी, जिस कारण वितरक फिल्म को खरीदने की हिम्मत नहीं दिखा पा रहे थे, लेकिन काफी भागदौड़ करने के पश्चात फिल्म दिल्ली व उत्तर प्रदेश में बिक गई। इसके बाद धीरे-धीरे अन्य क्षेत्रों में भी। फिल्म देखने के पश्चात दर्शकों की पहली प्रतिक्रिया रही कि 'देव आनंद को क्यों मार दिया गया?' परन्तु देव आनंद-वहीदा रहमान की श्रेष्ठ अदाकारी व विजय आनंद के बेहतरीन निर्देशन के कमाल के चलते फिल्म धीरे-धीरे पूरे भारत में बहुत बड़ी हिट साबित हुई।

फिल्म की सुपर सफलता में संगीतकार सचिन देव बर्मन के संगीत ने महत्वपूर्ण योगदान दिया तो गीतकार शैलेन्द्र की कलम से लिखे गीत भी किसी से पीछे न रहे। 'आज फिर जीने की तमन्ना है', 'वहां कौन है तेरा मुसाफिर जायेगा कहां', 'पिया तोसे नैना लागे रे', 'तेरे मेरे सपने अब एक रंग हैं', 'मोसे छल किये जायें', 'गाता रहे मेरा दिल, तू ही मेरी मंजिल', 'दिन ढल जाये हाय रात न जाये', 'क्या से क्या हो गया बेवफा तेरे प्यार में', 'अल्ला मेघ दे पानी', फिल्म के सभी गीत आज भी सुनने पर तरोताजा लगते हैं।

फिल्म 'गाइड' के गीत 'आज फिर जीने की तमन्ना है आज फिर मरने का इरादा है' की एक खास बात ये रही कि ये गीत मुखड़े से शुरू न होकर अंतरे से शुरू होने वाला भारतीय फिल्म संगीत का एक मात्र गीत है।

फिल्म की सफलता से अहसास हो गया कि दर्शकों को फिल्म बहुत अच्छी लगी और सभी मंत्रमुग्ध हो गये, तो वर्ष के लिये होने वाले फिल्म फेयर पुरस्कार समारोह में भी फि... 'गाइड' का ही बोलबाला रहा। सर्वश्रेष्ठ फिल्म के लिये देव आनंद को, निर्देशक का विजय आनंद को, अभिनेता के लिये देव आनंद को, अभिनेत्री के लिये वहीदा रहमान को, कहानी के लिये आर.के. नारायण को, श्रेष्ठ डॉयलाग के लिये विजय आनंद को व सिनेमाटोग्राफी के लिये फली मिस्त्री आदि को पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।

विजय आनंद के लिये फिल्म बहुत अजीब रही, क्योंकि फिल्म के सफल होने पर विजय आनंद को नाम, पुरस्कार तो बहुत मिला, लेकिन रुपये के नाम पर एक कौड़ी न मिली, जबकि देव आनंद ने अमेरिकी निर्देशक टड को दस लाख ... दिये थे और भाई होने के कारण विजय आनंद ने देव आनंद से रुपये के विषय में कुछ न कहा, सिर्फ प्रसिद्धि से ही संतुष्ट होना पड़ा।

कहते हैं, 'किसको क्या मिला ... मुकद्दर की बात है', मगर फिल्म इतिहास के लिये फिल्म 'गाइड' एक अमूल्य धरोहर की भांति है, जो कालांतर तक अमर रहेगी। भले ही बदलती पीढ़ी इसे स्वीकार न करे, मगर फिल्म देखकर हकीकत को झुठलाया नहीं जा सकता।

- मनोज कुमार सैनी